# भिंडी की वैज्ञानिक खेती

**दीपक मौर्य[1], महेंद्र कुमार अटल[1], राहूल कुमार वर्मा[2], रोहित मौर्य[3], राज भवन वर्मा[1] एवं विजय वर्मा[4]**

[1]बिहार कृषि विश्वविधालय, सबौर, भागलपुर, बिहार

[2]विषय वस्तु विशेशज्ञ, के. वी. के. मधेयपुरा, बिहार

[3]डॉ राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, बिहार

[4]एन. सी. ओ. एच.  नूरसराय बिहार

भिण्डी एक लोकप्रिय सब्जी है। इसका उत्पादन मुख्यतः सब्जी के लिए किया जाता है। गर्मी तथा बरसातीमौसम की सब्जियों में भिण्डी एक प्रमुख सब्जी है। इसके इस्तेमाल से शरीर के प्रचुर मात्रा में विटामिन ए, बी, सी प्रोटीन तथा खनिज तत्व की प्राप्ति होती है। इसके जड़ और तना का प्रयोग गुड़ तथा चीनी को साफ करने के लिए किया जाता है। इसके तने के रेशेदार छिलके का इस्तेमाल पेपर मिल में करते हैं। भिण्डी की खेती लगभग सालोभर की जाती है साथ ही साथ व्यवसायिक रूप में हमारे राज्य में इसकी खेती की जाती रही है। इसकी फसल के लिए 250 से 300 सेंटीग्रेड का तापमान सबसे अच्छा होता है।

## जलवायु एवं मिट्टी

भिण्डी लम्बे एवं गर्म मौसम वाली फसल है। वैसे इसकी खेती सालोभर की जाने लगी है। इसकी खेती सभी प्रकार की भूमि में की जाती है। लेकिन बलुई दोमट या दोमट मिट्टी इसकी खेती के लिए विशेष उपयुक्त है। 6 से 8 पी. एच. मान मिट्टी इस फसल के लिए अच्छी होती है।

## उन्नत प्रभेद एवं उपज

अरका अभय, अरका अनामिका, परभनी क्रान्ति, पंजाब पद्यामिनी इत्यादि गरम मौसम की उन्नत किस्म है। इनकी उपज क्षमता 70-90 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

**पूसा सावनी** 20-25 सेंमी. लम्बे हरे रंग के, कोमल, रोआँ रहित फल तथा मोजैक रोग प्रतिरोधी गुण वाली अच्छी किस्म है।

**पूसा मखमली** - 20-25 सेंमी. लम्बे, हरे कोमल तथा रोआँ रहित फल वाली प्रभेद है।

दोनों किस्म गरम तथा बरसात दोनों मौसम में लगाई जाती है। इनकी उपज क्षमता 100-125 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हैं। बरसाती किस्म में परभनी क्रान्ति, सेलेक्सन 8 से 10 तथा के. एस. 312 इत्यादि बरसात के लिए अच्छी होती है। इन सभी किस्मों की उपज क्षमता 90 से 125 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है। संकर किस्मों में भवानी, कृष्ण, हाब्रिड-6 तथा हाईब्रिड-8, इंद्रानिल तथा अनोखी इत्यादि प्रमुख है।

## खेती की तैयारी

खेत की अच्छी तरह से 3-4 बार जुताई करें। पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करें। ताकि खेत से खरपतवार अच्छी तरह साफ हो जाए। दूसरी व् तीसरी जुताई के समय 200 क्विंटल कम्पोस्ट खेत में मिला दें। अंतिम जुताई के समय नेत्रजन की आधी मात्रा तथा स्फूर व् पोटाश की पूरी मात्रा खेत में मिला दें। जुताई के बाद खेत में पाटा चलाकर मिट्टी की भुरभुरी तथा समतल बना लें। नेत्रजन की शेष आधी मात्रा पौधा जमने के 25 से 30 तथा 50-55 दिनों बाद दो बार में पौधों की जड़ों के पास देकर मिट्टी में अच्छी तरह से मिला दें।

## बीज एवं बुआई

बीज दर बरसाती में 8-10 किग्रा. तथा गर्म मौसम में 15-20 किग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर है। बीज का उपचार 2.5 ग्राम थीम या कैप्टान या वेविस्टीन दवा से प्रति किग्रा. बीज की दर से करें।

## बुआई का समय

गरमा फसल की बुआई का सबसे अच्छा समय 15 जनवरी से फरवरी के अंत तक होता है। जबकि बरसाती फसल को जून-जुलाई में लगते हैं।

## बुआई की विधि

भिण्डी के बीज सीधे खेत में ही लगाये जाते घंटे पानी में भिंगोकर एवं अंकुरण कराकर करनी चाहिए। गरमा मौसम में इसके बीजों की बुआई 45 ग 30 सेंमी. (कतार से कतार की दूरी 45 सेंमी. तथा पौध से पौध की दूरी 30 सेंमी. तथा पौध से पौध की दूरी 45 सेंमी.) पर करें। एक स्थान पर एक या दो बीज की बुआई करनी चाहिए। फसल की सिंचाई के लिए मेड व नाली बुआई से पूर्व बना लें।

## खाद एवं उर्वरक

भिण्डी की अच्छी उपज हेतु सही और संतुलित मात्रा में खाद एवं उर्वरक का व्यवहार मिट्टी के जांच के उपरान्त ही करना चाहिए।

इसकी खेती में निम्नलिखित मात्रा में खाद एवं उर्वरक के व्यवहार की अनुशंसा की जाती है। कम्पोस्ट 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर या 60-80 कि.ग्रेक्टेयर वर्मी कम्पोस्ट, यूरिया 200-250 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर, सिंगल सुपर फास्फेट 250-350 किलोग्राम तथा पोटाश 80 से 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर।

## निकाई-गुड़ाई एवं सिंचाई

सिंचाई के 3-4 दिनों बाद निकाई-गुड़ाई करने से खेत के खरपतवार नष्ट हो जाते है साथ ही साथ खेत की मिट्टी हल्की तथा खेत में नमी बनी रहती है। खेत में अधिक खरपतवार निकलने पर खरपतवार नाशी दवा लासो 2 लीटर 800 लीटर पानी में घोल बना कर खेत में छिड़कावें। गर्म मौसम में भिण्डी की फसल को 8-10 दिनों पर सिंचाई करनी चाहिए। सिंचाई करते समय ध्यान रहे कि अधिक जल जमाव न हो सके। बरसात में आवश्यकतानुसार 10-15 दिनों पर सिंचाई करें। माघ में जब पानी पड़े तो किसान को चाहिए की जमीन को खूब जुतवा दे। जून तक ढेले को वैसे ही छोड़ दे धूप में तापने के लिए। भादो में बरसात होने पर मिट्टी को सड़ने दें। फिर उसमें अनाज उपजाएं।

### निकाई एवं अन्तः क्रियाएं

खेत की निकाई करके इसको खर-पतवारों से मुक्त रखना चाहिए तथा 2-3 निकाई - गुड़ाई अवश्य करनी चाहिए।

## प्रमुख कीट

### तना व फल छेदक कीट

यह भिण्डी का एक प्रमुख कीट है। इसकी सूड़ियां फल तथा तने में छेद बनाती है, जिससे फसल को काफी नुकसान होता है, तथा साथ ही साथ फलों की गुणवत्ता पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है।

### नियंत्रण

इस कीट के नियंत्रण के लिए ऐसे खेत में भिण्डी नही बोनी चाहिए जिसमें भिण्डी वर्गीय फसल पहले से ली गई हो। कीट से प्रभावित फलों को तोड़कर मिट्टी में दबा देना चाहिए।

साइपरमेथ्रीरीन 0.5 मिली0 दवा प्रति ली0 पानी में मिलाकर 15 दिनों के अन्तराल पर फूल आना प्रारम्भ होने तक छिड़काव करते रहना चाहिए। इसके बाद यदि आवश्यकता हो तो हल्के प्रभव वाली कीट नाशी जैसे मैलाथियान का छिड़काव गहन तुड़ाई के बाद करना चाहिए।

## प्रमुख रोग

### पीला मोजेक रोग

यह भिण्डी का एक प्रमुख रोग है। यह रोग विषाणु के द्वारा होता है, जिसे सफेद मक्खी फैलाती है। इससे प्रभावित पौधों की पत्तियां व फल पीले पड़ जाते हैं, तथा छोटे रह जाते हैं।

### नियंत्रण

इस रोग से बचने के लिए रोग प्रतिरोधी किस्मों को ही लगाना चाहिए। रोग ग्रसित पौधों को रोग की आरम्भिक अवस्था में ही खेत से उखाड़कर मिट्टी में दबा देना चाहिए। सफेद मक्खी के नियंत्रण के लिए मैलाथियान 0.1 मिली0 दवा प्रति ली0 पानी में मिलाकर 10 दिनों के अन्तराल पर छिड़काव करते रहना चाहिए।

### चूर्णी फफूंद रोग

इस रोग से ग्रसित होने पर पौधों की पत्तियों पर भूरे रंग का चूर्ण बन जाता है, जिससे पत्तियां सिकुड़कर सूख जाती है। इस रोग के नियंत्रण के लिए बाविस्टीन 0.1 प्रतिशत का छिड़काव करना चाहिए।

## फलों की तुड़ाई

भिण्डी के पौधों में लगभग 45 से 50 दिन बाद फूल लगता है तथा फूल आने के लगभग 7 दिन बाद फल तोड़ने योग्य हो जाता है। भिण्डी के फलों की प्रथम तुड़ाई के बाद प्रत्येक दूसरे-तीसरे दिन फलों की तुड़ाई करते रहना चाहिए। यदि फलों को जल्दी न तोड़ा गया तो फसल की वृद्धि तथा फलों के लगने की क्षमता पर बुरा प्रभाव पड़ता है। फलतः पैदावार तथा गुणवत्ता की कमी हो जाती है। दस्ताना लगाकर नियमित अन्तराल पर तुड़ाई करें तथा फलों को सुरक्षित बाजार तक पहुंचाएं। 3-4 तुड़ाई के बाद हल्की यूरिया का छिड़काव करते रहें।

## उपज

ग्रीष्म कालीन फसल से लगभग 150-180 कु0 प्रति हे0 तक उपज प्राप्त की जा सकती है एवं किसान अपनी आय बढ़ा सकते है।